International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"संयुक्त पंजाब से हरियाणा के पृथक्करण का विवरणात्मक अध्ययन"

सोनिका
शोधार्थी
राजनीतिक विज्ञान शास्त्र,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक

शोध सार

हरियाणा प्रदेश की स्थापना से पूर्व हरियाणा संयुक्त पंजाब का एक हिस्सा था। वर्ष 1966 में हरियाणा की पृथक राज्य के रूप में स्थापना हुई। राज्य की स्थापना में अनेक राजनीतिक दलों व नेताओं ने समय–समय पर अनेक प्रयास किए तथा प्रदेश की स्थापना में अविस्मरणीय भूमिका निभाई। प्रस्तुत शोध–पत्र में इन सभी नेताओं तथा राजनीतिक दलों की सक्रिय भूमिका व कार्यों का वर्णन किया गया है।

मुख्य शब्द *:* राजनीति, नेता, राजनीति दल आदि

उद्देश्य : संयुक्त पंजाब के समय हरियाणा की राजनीति एवं हरियाणा बनने में विभिन्न दलों व नेताओं की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीक आंकड़ों का प्रयोग किया है इसमें साक्षात्कार, समाचार–पत्र, पुस्तकें और इटरनेट आदि का प्रयोग किया है।

भूमिका

1 नवंबर 1966 को गठन से पहले हरियाणा पंजाब का भाग था। अनेक प्रयासों के पश्चात् ही हरियाणा राज्य पंजाब से अलग हो पाया। इस नवनिर्मित राज्य के गठन में अनेक राजनीतिक दलों, नेताओं, हरियाणा की आम जनता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हरियाणा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रदेश के निर्माण के समय यह हरियाणा नाम कोई नया शब्द नहीं था अपितु *'एन.डब्ल्यू. फ्रंटियर'* से 1858 में इसे अलग किया गया था और पंजाब में सम्मिलित कर दिया गया था और इसके पीछे का कारण 1857 के विद्रोह में इस क्षेत्र का ब्रिटिश सरकार के खिलाफ होना भी माना जाता है।[1]

जैसा कि पूर्व में भी बताया गया है कि हरियाणा पंजाब का ही भाग था। पंजाब द्वारा हरियाणा क्षेत्र का समय–समय पर शोषण होता रहा। हरियाणा वह भू–भाग था जिस पर न तो कभी ब्रिटिश सरकार ने ध्यान दिया और न ही पंजाबी अधिकारियों ने। इस समय पर कांग्रेस की जड़ें हरियाणा में पूरी तरह से जम गई थी। केवल सर छोटूराम (जो कि यूनियनिस्ट पार्टी से जुड़े थे) का ही प्रभाव इस क्षेत्र में देखने को मिलता था। इस क्षेत्र के साथ बहुत ही भेदभाव किया जाता था। इसका परिणाम यह निकला कि वर्ष 1923 में पहली बार हरियाणा प्रांत को पंजाब से अलग राज्य बनाने की मांगें उठने लगी। स्वामी सत्यानंद ने लाहौर से इस मांग को उठाया। इसके पश्चात् यही मांग वर्ष 1926 की *'ऑल इंडिया मुस्लिम लीग'* की कांफ्रेस में भी उठाई गई। इससे पहले सर छोटूराम की अध्यक्षता में संपन्न ऑल इंडिया जाट स्टूडेंट्सकॉन्फ्रेंस मेरठ में भी इस मांग को उठाया गया था। इस कांफ्रेंस में यह तर्क दिया गया था कि हिंदी भाषा से जुड़ा इलाका अंबाला मंडल को पंजाब से अलग दिल्ली सेजोड़ा जाए। इसके पश्चात् राज्य निर्माण की वार्ता का आधार भाषा व संस्कृति को रखा गया। अलग हरियाणा प्रांत की उम्मीद में इस क्षेत्र के नेता लाला देशबंधु गुप्ता, पंडित श्रीराम शर्मा, नेकीराम शर्मा आदि महात्मा गांधी से बादली रेलवे स्टेशन पर मुलाकात करने पहुंचे। इसके बाद द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भी हरियाणा का मुद्दा उठाया गया और इस मांग को पुनः 1946 में ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉक्टर पट्टाभि सीता रमैया ने भाषा और संस्कृति के आधार पर अपना समर्थन दिया लेकिन 1947 में देश के आजाद होने के पश्चात्

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कांग्रेस पार्टी द्वारा अलग प्रांतों की इच्छा को दबाना शुरू कर दिया गया और इसको राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए खतरा बताकर अपना पल्ला झाड़ लिया।[2]

देश के आजादी के पश्चात् चौधरी देवीलाल और अन्य नेताओं ने हरियाणा क्षेत्र से जुड़े भेदभाव को देखा। वर्ष 1952 में पहला विधानसभा चुनाव हुआ। इस चुनाव के पश्चात् विधायक लहरी सिंह और श्रीराम शर्मा (जो कि हिंदी क्षेत्र से जुड़े थे) को पंजाब मंत्रिमंडल में शामिल किया गया। इस घटना से चौधरी देवीलाल को काफी आघात पहुंचा। देवीलाल के साथ अन्य नेताओं ने भी रोष प्रकट किया। इसके परिणाम स्वरूप चौधरी चरण सिंह और चौधरी देवीलाल ने मिलकर उत्तर प्रदेश से एक सै और हरियाणा क्षेत्र के 25 विधायकों के साथ मिलकर अलग राज्य निर्माण का ज्ञापन सौंपा। 1954 में एक और घटना सामने आई जिसमें चौधरी देवीलाल को विधानसभा अध्यक्ष बनाने की मांग को नकार कर पंजाबी क्षेत्र के गुरुदयाल सिंह को अध्यक्ष बना दिया गया। प्रताप सिंह कैरो के सन् 1955 में संयुक्त पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री बनने पर भी हिंदी भाषी क्षेत्र के साथ भेदभाव हुआ। सन् 1956 में पेप्सू स्टेट पंजाब में भी प्रोफेसर शेर सिंह को डिप्टी कमिश्नर पद देने की बजाय बृजभान को यह पद सौंपा गया। सन् 1959 में चौधरी देवीलाल ने हरियाणा को भाषा के आधार पर विभाजित करने को कहा जबकि उसी समय तारा सिंह ने धर्म को इसका आधार बनाया। पंजाबविधानसभा में चौधरी देवीलाल व अन्य राजनीतिक दलों के नेताओं द्वारा हरियाणवी भाषा का प्रयोग विशेष बोली के अंतर के आधार पर उजागर करने के लिए अलग प्रांत की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि हमारीवेशभूषा, रहन–सहन व भाषा अलग है। अतः इस आधार पर हमें अलग प्रांत चाहिए। सन् 1960 में चौधरी देवीलाल ने तृतीय पंचवर्षीय योजना में पंजाबी भेदभाव को सभी के सामने लाने का प्रयास किया। हमारे नेताओं द्वारा स्पष्ट किया गया कि हिंदी क्षेत्र की अपेक्षा पंजाबी क्षेत्र के लोगों को ज्यादातर नौकरियाँ दी जाती हैं। इसे एक आंकड़े द्वारा स्पष्ट किया गया जैसे सचिव/कमिश्नर के 9 पदों में से हिंदी क्षेत्र को कुछ भी नहीं मिला। 10 भारतीय

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लोकसेवा अधिकारियों में केवल एक पद, पंजाब लोकसेवा अधिकारियों के 300 में से हिंदी क्षेत्र को केवल 75, 1 उप अधीक्षक पुलिस और जिला स्तरीय स्कूल क्रमशः 18 में से 4 हिंदी भाषायी।पंजाब सरकार में 60 सदस्यों वाले मंत्रिमंडल में से इस क्षेत्र का केवल एक ही मंत्री था। दिल्ली में चौधरी देवीलाल, चरण सिंह व अन्य नेताओं ने कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष कामराज को अलग हरियाणा गठन की बात कही और इसका कारण वित्तीय रूप में हरियाणा क्षेत्र की उपेक्षा को बताया गया। 1962 में हरियाणा प्रांत की मांग को दबाने का प्रयास करने हेतु पंजाब विधानसभा के चुनावों में टिकटों का गलत बंटवारा किया गया ताकि हिंदी क्षेत्रीय नेता कमजोर पड़ जाएं।[3] 1962 को पहला गठबंधन *'प्रोग्रेसिव इंडिपेंडेंट'* पार्टी के नाम से किया गया। इसका अध्यक्ष पद चौधरी देवीलाल को सौंपा गया। इस गठबंधन के निर्माण का मुख्य कारण संयुक्त पंजाब के मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरो की हिंदी भाषी क्षेत्र के प्रति अन्याय पूर्ण नीतियाँ थीं। दूसरी तरफ प्रताप सिंह कैरो बतौर मुख्यमंत्री तानाशाही और भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा था। सभी नेताओं ने मिलकर इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई और 22 सदस्योंका गठबंधन बनाया गया। इस गठबंधन में आचार्य कृपलानी, चौधरी देवीलाल, मौलवी अब्दुल गनी, मास्टर तारा सिंह और लाला जगत नारायण थे। इस गठबंधन ने 8 संसदीय सीटों में से 2 और 54 विधानसभा सीटों में से 17 पर विजय प्राप्त की।[4]

इसके पश्चात् 1963 में *'यूनाइटेड फ्रंट'* का गठन किया गया। यह गठन चौधरी देवीलाल द्वारा 24 सदस्यों को मिलाकर बनाया गया। यह हरियाणा निर्माण के लिए दूसरा महत्वपूर्ण संगठन था। यह वह समय था जिसमें महसूस किया गया कि बिनाएकता और मजबूती के प्रताप सिंह कैरो का विरोध कर सफलता हासिल करना असंभव है। *'प्रोग्रेसिव इंडिपेंडेंट'* पार्टी में हीअकाली दल, भारतीय जनसंघ, प्रजातंत्र पार्टी और कुछ कांग्रेसी पार्टी से असंतुष्ट नेता भी इसमें आ मिले और इस दल का नाम रखा गया *'युनाइटेड फ्रंट'*। इस दल के द्वारा हरियाणा निर्माण में भेदभाव के खिलाफ एक चार्जशीट भी जवाहरलाल नेहरु को सौंपी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गई। इसका बहुत ही प्रभाव पड़ा, इस के दबाव से प्रताप सिंह कैरो के खिलाफ जांच कमेटी *'दास आयोग 1964'* का गठन किया तथा जांच में पाया गया कि मुख्यमंत्री अपने परिवार के मोह में सत्ता का दुरुपयोग कर रहे हैं। और अंततः प्रताप सिंह कैरो को मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र देने के लिए विवश होना पड़ा।[5]

हरियाणा के निर्माण में भारतीय जनसंघ की भूमिका

हरियाणा को एक अलग स्वतंत्र राज्य बनाने के लिए उन्होंने अनेकों आंदोलन किए तथा विधानसभा में इसके पक्ष में लगातार जनसमर्थन भी जुटाते रहे। डॉ० मंगल सेन जी ने प्रोफेसर शेर सिंह जो कि आर्य समाज से संबंध रखते थे, के साथ मिलकर गौ–रक्षा आंदोलन की शुरुआत भी की थी।

हरियाणा स्थापना के समय हिन्दी आंदोलन चलाया गया। इस आंदोलन में डॉ० मंगल सेन ने विधानसभा का बँटवारा किए जाने की माँग को रखा तथा इसके लिए एक कमेटी भी बनाई ताकि विधानसभा का बँटवारा किया जा सके। डॉ० मंगल सेन ने हिन्दी इलाके के लोगों से फार्म भी भरवाए ताकि हरियाणा राज्य की स्थापना ज्यादा से ज्यादा हिन्दी लोगों की संख्या को आधार बनाकर कराई जा सके। हरियाणा स्थापना के पश्चात् हिन्दी बहुलता वाले क्षेत्र हरियाणा में आ गए। डॉ० मंगल सेन शरणार्थियों को 'पुरुषार्थी' कह कर सम्बोधित करते थे। हरियाणा निर्माण का संघर्ष लम्बे समय तक चला। डॉ० मंगल सेन इसके प्रमुख नेता रहे। हरियाणा बनने के बाद प्रदेश के निर्माण में उन्होंने अनुकरणीय योगदान दिया। रोहतक तथा डॉ० मंगल सेन एक दूसरे के पूरक बन गए।[6]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सर्वदलीय हरियाणा एक्शन कमेटी

पंजाबी सूबे की मांग को देखते हुए केंद्र सरकार ने हुकम सिंह की अध्यक्षता में 23 सितंबर 1956 को सर्वदलीय समिति का गठन किया। इससे पहले जन समर्थन में होने का कारण बताकर हिंदी क्षेत्र हरियाणा की मांग को नकार दिया गया था।[7]

जहां छोटूराम ने किसान वर्ग का प्रतिनिधित्व किया उसी रूप में चौधरी देवीलाल ने व प्रोफेसर शेर सिंह ने जाट व कामगार वर्ग का प्रतिनिधित्व किया व अलग हरियाणा प्रांत के निर्माण में अहम भूमिका निभाई। सरदार प्रताप सिंह कैरो के त्यागपत्र देने के पश्चात् नए मुख्यमंत्री को पदभार सौंपना था, इसके लिए सरदार दरबार सिंह, सरदार ज्ञान सिंह रड़ेवाला, लाला बृजभान आदि कई उम्मीदवारों ने अपनी उम्मीदवारी जताई, लेकिन कांग्रेस के उच्च–स्तरीय नेताओं ने कामरेड रामकिशन को पंजाब का मुख्यमंत्री पद सौंप दिया। कामरेड रामकिशन की सिफारिश पर चौ० रिजक राम को उप–मुख्यमंत्री बनाया गया तथा मंत्रिमंडल में स्थान दिया गया। लेकिन साथ ही साथ प्रताप सिंह कैरो कांग्रेस राष्ट्रीय अध्यक्ष से तालमेल बैठाकर दोबारा मुख्यमंत्री बनने के अवसर तलाशने लगा। लेकिन उसके विरोधियों द्वारा दिल्ली से चंडीगढ़ की यात्रा के दौरान ही जीटी रोड पर प्याऊ मनियारी के पास उसका कत्ल कर दिया गया।

हरियाणा हिंदी समिति व श्रीमती इंदिरा गांधी के मध्य समझौता

23 जनवरी 1964 को श्री लाल बहादुर शास्त्री के निधन के पश्चात् श्रीमती इंदिरा गांधी प्रधानमंत्रीबनी। इंदिरा गांधी द्वारा हरियाणा हिंदीसे एक समझौता किया गया कि हरियाणा प्रांत की स्थापना के पश्चात्विधानसभा व लोकसभा चुनाव में हिंदी समिति के लोगों को भी कांग्रेस द्वारा अलग से टिकटों का बंटवारा किया जाएगा और इसी प्रकार से चौधरी देवीलाल व

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रोफेसर शेर सिंह आदि समिति के नेताओं ने अपने आप को किसी समझौते के आधार पर कांग्रेस में शामिल कर लिया। इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री बनने के पश्चात् हरियाणा हिंदी क्षेत्र में अपना विशेष योगदान दिया तथा 1 नवंबर 1966 को पंजाबी सूबा और हरियाणा प्रांत पंजाब के दो प्रांत बना दिए गए। संयुक्त पंजाब से हरियाणा और पंजाब को विभाजित करके पंजाब प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ज्ञानी गुरमुख सिंहमुसाफिर को पंजाब का मुख्यमंत्री तथा पंजाब कांग्रेस उपाध्यक्ष पंडित भगवत दयाल शर्मा को हरियाणा का मुख्यमंत्रीघोषित कर नियुक्त कर दिया गया।[8]

वर्ष 1920 से लेकर 1946 तक हरियाणा क्षेत्र की राजनीति में आर्य समाज व यूनियनिस्ट पार्टी का प्रभाव देखते है। इसके बाद चौधरी छोटूराम की मृत्यु से हरियाणा मेंइसका प्रभाव बढ़ना प्रारंभ हुआ और वर्ष 1972 तक निरंतर सत्ता पर अपना नियंत्रण बनाए रखा। इसका अर्थ यह नहीं है कि यहाँ पर जनाधार से जुड़े नेता नहीं थे लेकिन वर्ष 1966 तक इनका स्थान पंजाब मंत्रिमंडल में हमेशा एक या दो मंत्रियों तक ही सीमित रहा। राजनैतिक रूप से दक्षिणि क्षेत्र के नेताओं को हमेशा से ही दबाया जाता रहा। जिस नेता में टक्कर देने की योग्यता होती उसे ही दबा लिया जाता था। सरदार प्रताप सिंह कैरो ने पंडित भगवत दयाल शर्मा को मंत्रिमंडल में जगह देने का अर्थ चौधरी देवीलाल और प्रोफेसर शेर सिंह के बढ़ते प्रभाव को कम करना था। अंततः अनेक कोशिशों तथा राजनीतिक दलों के नेताओं की कोशिश के बाद 1 नवंबर 1966 को हरियाणा की स्थापना हो गई।[9]

निष्कर्ष

शोध पत्र के अध्ययन के पश्चात् हम कह सकते हैं कि संयुक्त पंजाब से पृथक होकर नये राज्य हरियाणा प्रदेश के निर्माण के लिए संघर्ष काफी समय से चल रहा था उसके पीछे कारण संयुक्त पंजाब में हिन्दी भाषी लोगों के साथ हो रहे भेद भाव थे। स्थिति को देखते हुए

समय–समय पर पृथक राज्य की मांग उठी और अनेक राजनीतिक दलों एवं नेताओं के प्रयासों से हरियाणा भारत के सत्रहवें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया।

सन्दर्भ सूची

1 https://ravindersinghdhull.net/2016/11/01/History-Haryana

2 चौटाला अजय सिंह, चौ० देवीलाल की तपस्या की देन है, समृद्ध हरियाणा, दैनिक ट्रिब्यून, नई दिल्ली, 25 दिसम्बर 2008, पृ० सं० 6

3 चौटाला अजय सिंह, चौ० देवीलाल की तपस्या की देन है, समृद्ध हरियाणा, दैनिक ट्रिब्यून, नई दिल्ली, 25 दिसम्बर 2008, पृ० सं० 6

4 सिंह हरबन्स, जनसंदेश, जनसेवा ट्रस्ट प्रकाशन, गुरूग्राम, अंक–6, 22 सितम्बर 2007, पृ० सं० 8

5 सिंह हरबन्स, जनसंदेश, जनसेवा ट्रस्ट प्रकाशन, गुरूग्राम, अंक–6, 22 सितम्बर 2007, पृ० सं० 8

6 साक्षात्कार श्री श्याम सुंदर पसरीजा, पूर्व प्रवक्ता, (वाणिज्य विभाग) हिन्दू कॉलेज, रोहतक

7 सिंह संजय, आधुनिक भारत के महानायक, ओम साईंनाथ प्रिंटर्स, मुरादाबाद, 2007, पृ० सं० 75–76

8 जाखड़ रामसिंह, हरियाणा के राजनैतिक इतिहास की झलक, हरियाणा साहित्य मण्डल रोहतक

9 दहिया भीम सिंह, पावर पॉलिटिक्स इन हरियाणा, ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ० सं० 45